श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

गर्भ-स्तुति-10.2 (भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु)

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कंधः

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सत्यव्रतं(म्) सत्यपरं(न्) त्रिसत्यं(म्),

सत्यस्य योनिं(न्) निहितं(ञ्) च सत्ये ।

सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं(म्),

सत्यात्मकं(न्) त्वां(म्) शरणं(म्) प्रपन्नाः ॥ 1॥

सत्य+ मृत+ सत्य+ नेत्रं(म्), सत्यात्+ मकं(न्)

प्रभो! आप सत्यसङ्कल्प हैं। सत्य ही आपकी प्राप्तिका श्रेष्ठ साधन है। सृष्टिके पूर्व, प्रलयके पश्चात् और संसारकी स्थितिके समय--इन असत्य अवस्थाओंमें भी आप सत्य हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँच दृश्यमान सत्योंके आप ही कारण हैं। और उनमें अन्तर्यामीरूपसे विराजमान भी हैं। आप इस दृश्यमान जगत्के परमार्थस्वरूप हैं।आप ही मधुर वाणी और समदर्शनके प्रवर्तक हैं। भगवन्! आप तो बस, सत्यस्वरूप ही हैं। हम सब आपकी शरणमें आये है ।

एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमूलश्-

चतूरसः(फ्) पं(ञ्)चविधः(ष्) षडात्मा ।

सप्तत्वगष्टविटपो नवाक्षो,

दशच्छदी द्विखगो ह्यादिवृक्षः ॥ 2॥

द्विफलस्+ त्रिमूलश्, सप्तत्व+ गष्ट+ विटपो

यह संसार क्या है,एक सनातन वृक्ष । इस वृक्षका आश्रय है- एक प्रकृति। इसके दो फल हैं-सुख और दुःख; तीन जड़ें हैं - सत्त्व,रज और तम; चार रस हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसके जाननेके पाँच प्रकार हैं- श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, रसना और नासिका । इसके छः स्वभाव है - पैदा होना, रहना, बढ़ना, बदलना,घटना और नष्ट हो जाना। इस वृक्षकी छाल हैं सात धातुएँ - रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि,मज्जा और शुक्र । आठ शाखाएँ हैं- पाँच महाभूत, मन, बुद्धि और अहङ्कार। इसमें मुख आदि नवों द्वार खोड़र हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय - ये दस प्राण ही इसके दस पत्ते हैं। इस संसाररूप वृक्षपर दो पक्षी हैं- जीव और ईश्वर

त्वमेक एवास्य सतः(फ्) प्रसूतिस्-

त्वं(म्) सन्निधानं(न्) त्वमनुग्रहश्च ।

त्वन्मायया सं(वँ)वृतचेतसस्त्वां(म्),

पश्यन्ति नाना न विपश्चितो ये ॥ 3॥

त्वन्+ माययाा, सं(वँ)वृतचे+ तसस्+ त्वां(म्)

इस संसाररूप वृक्षकी उत्पत्तिके आधार एकमात्र आप ही हैं। आपमें हीइसका प्रलय होता है और आपके ही अनुग्रहसे इसकी रक्षा भी होती है। जिनका चित्त आपकी मायासे आवृत हो रहा है, इस सत्यको समझने की शक्ति खो बैठा है-वे ही उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाले ब्रह्मादि देवताओंको अनेक देखते हैं। तत्त्वज्ञानी पुरुष तो सबके रूपमें केवल आपका ही दर्शन करते हैं।

बिभर्षि रूपाण्यवबोध आत्मा,

क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य ।

सत्त्वोपपन्नानि सुखावहानि,

सतामभद्राणि मुहुः(ख्) खलानाम् ॥ 4॥

रूपाण्+ यवबोध, सत्त्वो+ पपन्+ नानि, सता+ मभद्राणि

आप ज्ञानस्वरूप आत्मा हैं। चराचर जगत्के कल्याणके लिये ही अनेकों रूप धारण करते हैं। आपके वे रूप विशुद्ध अप्राकृत सत्त्वमय होते हैं और संत पुरुषों को बहुत सुख देते हैं। साथ ही दुष्टोंको उनकी दुष्टताका दण्ड भी देते हैं। उनके लिये अमङ्गलमय भी होते हैं।

त्वय्यम्बुजाक्षाखिलसत्त्वधाम्नि,

समाधिनाऽऽवेशितचेतसैके ।

त्वत्पादपोतेन महत्कृतेन,

कुर्वन्ति गोवत्सपदं(म्) भवाब्धिम् ॥ 5॥

त्वय्यम्+ बुजाक्षा+ खिलसत्त्व+ धाम्नि, समाधिनाऽऽ+ वेशितचे+ तसैके,

त्वत्+ पाद+ पोतेन, महत्+ कृतेन, गोवत्स+ पदं(म्)

कमलके समान कोमल अनुग्रहभरे नेत्रोंवाले प्रभो। कुछ बिरले लोग ही आपके समस्त पदार्थों और प्राणियोंके आश्रयस्वरूप रूपमें पूर्ण एकाग्रतासे अपना चित्त लगा पाते हैं और आपके चरणकमलरूपी जहाजका आश्रय लेकर इस संसारसागरको बछड़के खुरके गढ़के समान अनायास ही पार कर जाते हैं। क्यों न हो, अबतक के संतोंने इसी जहाजसे संसारसागरको पार जो किया है।

स्वयं(म्) समुत्तीर्य सुदुस्तरं(न्) द्युमन्,

भवार्णवं(म्) भीममदभ्रसौहृदाः ।

भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते,

निधाय याताः(स्) सदनुग्रहो भवान् ॥ 6॥

भीम+ मदभ्र +सौहृदाः, भवत्+ पदाम्भो+ रुहना+ वमत्र

परम प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! आपके भक्तजन सारे जगत्के निष्कपट प्रेमी, सच्चे हितैषी होते हैं। वे स्वयं तो इस भयङ्कर और कष्टसे पार करनेयोग्य संसारसागरको पार कर ही जाते हैं, किन्तु औरोके कल्याणके लिये भी वे यहाँ आपके चरण कमलोंकी नौका स्थापित कर जाते हैं। वास्तवमें सत्पुरुषोंपर आपकी महान् कृपा है। उनके लिये आप अनुग्रहस्वरूप ही हैं।

येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्-

त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।

आरुह्य कृच्छ्रेण परं(म्) पदं(न्) ततः(फ्),

पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः ॥ 7॥

येऽन्येऽ+ रविन्दाक्ष, त्वय्यस्त+भावा+ दविशुद्ध+ बुद्धयः, पतन्त्य+ धोऽना+ दृतयुष्म+ दङ्घ्रयः

कमलनयन ! जो लोग आपके चरणकमलोकी शरण नहीं लेते तथा आपके प्रति भक्तिभावसे रहित होने के कारण जिनकी बुद्धि भी शुद्ध नहीं है, वे अपनेको झूठ मूठ मुक्त मानते हैं। वास्तवमें तो वे बद्ध ही हैं। वे यदि बड़ी तपस्या और साधनाका कष्ट उठाकर किसी प्रकार ऊँचे से ऊँचे पदपर भी पहुँच जायें, तो भी वहाँसे नीचे गिर जाते हैं।

तथा न ते माधव तावकाः(ख्) क्वचिद्,

भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदाः ।

त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया,

विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो ॥ 8॥

मार्गात्+ त्वयि, विनायकानी+ कपमूर्धसु

परन्तु भगवन् ! जो आपके अपने निज जन हैं, जिन्होंने आपके चरणों में अपनी सच्ची प्रीति जोड़ रखी है,वे कभी उन ज्ञानाभिमानियोंकी भाँति अपने साधन मार्गसे गिरते नहीं । प्रभो ! वे बड़े-बड़े विघ्न डालनेवालोंकी सेनाके सरदारोंके सिरपर पैर रखकर निर्भय विचरते हैं, कोई भी विघ्न उनके मार्गमें रुकावट नहीं डाल सकते;क्योंकि उनके रक्षक आप जो हैं।

सत्त्वं(वँ) विशुद्धं(म्) श्रयते भवान् स्थितौ,

शरीरिणां(म्) श्रेय उपायनं(वँ) वपुः ।

वेदक्रियायोगतपः(स्)समाधिभिस्-

तवार्हणं(यँ) येन जनः(स्) समीहते ॥ 9॥

आप संसारकी स्थितिके लिये समस्त देहधारियोंको परम कल्याण प्रदान करनेवाला विशुद्ध सत्त्वमय, सच्चिदानन्दमय परम दिव्य मङ्गल-विग्रह प्रकट करते है। उस रूपके प्रकट होनेसे ही आपके भक्त वेद, कर्मकाण्ड, अष्टांगयोग, तपस्या और समाधिके द्वारा आपकी आराधना करते हैं। बिना किसी आश्रयके वे किसकी आराधना करेंगे ?

सत्त्वं(न्) न चेद्धातरिदं(न्) निजं(म्) भवेद्,

विज्ञानमज्ञानभिदापमार्जनम् ।

गुणप्रकाशैरनुमीयते भवान्,

प्रकाशते यस्य च येन वा गुणः ॥ 10 ॥

चेद्धा+ तरिदं(न्), विज्ञानमज्ञा+ नभिदा+ पमार्जनम्, गुणप्रकाशै+ रनुमीयते

प्रभो । आप सबके विधाता हैं। यदि आपका यह विशुद्ध सत्त्वमय निज स्वरूप न हो, तो अज्ञान और उसके द्वारा होनेवाले भेदभावको नष्ट करनेवाला अपरोक्ष ज्ञान ही किसीको न हो। जगत्में दीखनेवाले तीनों गुण आपके हैं और आपके द्वारा ही प्रकाशित होते हैं, यह सत्य है। परन्तु इन गुणोंकी प्रकाशक वृत्तियोंसे आपके स्वरूपका केवल अनुमान ही होता है,वास्तविक स्वरूपका साक्षात्कार नहीं होता।

न नामरूपे गुणजन्मकर्मभिर्-

निरूपितव्ये तव तस्य साक्षिणः ।

मनोवचोभ्यामनुमेयवर्त्मनो,

देव क्रियायां(म्) प्रतियन्त्यथापि हि ॥ 11॥

वचोभ्या+ मनुमेय+ वर्त्मनो, प्रतियन्+ त्यथापि

भगवन् ! मन और वेद-वाणीके द्वारा केवल आपके स्वरूपका अनुमानमात्र होता है। क्योंकि आप उनके द्वारा दृश्य नहीं; उनके साक्षी हैं। इसलिये आपके गुण, जन्म और कर्म आदिके द्वारा आपके नाम और रूपका निरूपण नहीं किया जा सकता। फिर भी प्रभो! आपके भक्तजन उपासना आदि क्रियायोगोंके द्वारा आपका साक्षात्कार तो करते ही हैं।

शृण्वन् गृणन् सं(म्)स्मरयं(म्)श्च चिन्तयन्-
नामानि रूपाणि च मं(ङ्)गलानि ते ।
क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयो-
राविष्टचेता न भवाय कल्पते ॥ 12॥
यस्त्वच्+ चरणा+ रविन्दयो

जो पुरुष आपके मङ्गलमय नामों और रूपोंका श्रवण, कीर्तन, स्मरण और ध्यान करता है और आपके चरणकमलोंकी सेवामें ही अपना चित्त लगाये रहता है- उसे फिर जन्म मृत्युरूप संसारके चक्रमें नहीं आना पड़ता ।

दिष्ट्या हरेऽस्या भवतः(फ्) पदो भुवो,

भारोऽपनीतस्तव जन्मनेशितुः ।

दिष्ट्यां(ङ्)कितां(न्) त्वत्पदकैः(स्) सुशोभनैर्-

द्रक्ष्याम गां(न्) द्यां(ञ्) च तवानुकम्पिताम् ॥ 13॥

भारोऽ+ पनीतस्+ तव, दिष्ट्याङ्+ कितां(न्), त्वत्+ पदकैः(स्)

सम्पूर्ण दुःखोंके हरनेवाले भगवन् ! आप सर्वेश्वर हैं। यह पृथ्वी तो आपका चरणकमल ही है। आपके अवतारसे इसका भार दूर हो गया । धन्य है ! प्रभो ! हमारे लिये यह बड़े सौभाग्यकी बात है कि हमलोग आपके सुन्दर-सुन्दर चिह्नोंसे युक्त चरणकमलोंके द्वारा विभूषित पृथ्वीको देखेंगे और स्वर्गलोकको भी आपकी कृपासे कृतार्थ देखेंगे ।

न तेऽभवस्येश भवस्य कारणं(वँ),

विना विनोदं(म्) बत तर्कयामहे ।

भवो निरोधः(स्) स्थितिरप्यविद्यया,

कृता यतस्त्वय्यभयाश्रयात्मनि ॥ 14॥

स्थिति+ रप्य+ विद्यया, यतस्+ त्वय्+ यभया+ श्रयात्मनि

प्रभो ! आप अजन्मा हैं। यदि आपके जन्मके कारणके सम्बन्धमें हम कोई तर्क ना करें, तो यही कह सकते हैं कि यह आपका एक लीला-विनोद है। ऐसा कहनेका कारण यह है कि आप तो द्वैतके लेशसे रहित सर्वाधिष्ठान स्वरूप हैं और इस जगत्की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय अज्ञानके द्वारा आपमें आरोपित हैं।

मत्स्याश्वकच्छपनृसिं(म्)हवराहहं(म्)स-

राजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ।

त्वं(म्) पासि नस्त्रिभुवनं(ञ्) च यथाधुनेश,

भारं(म्) भुवो हर यदूत्तम वन्दनं(न्) ते ॥ 15॥

मत्स्याश्व+ कच्छप+ नृसिं(म्)ह+ वराह+ हं(म्)स, राजन्+ यविप्र+ विबुधेषु

प्रभो! आपने जैसे अनेकों बार मत्स्य, हयग्रीव, कच्छप, नृसिंह, वराह, हंस, राम, परशुराम और वामन अवतार धारण करके हमलोगोंकी और तीनों लोकोंकी रक्षा की है- वैसे ही आप इस बार भी पृथ्वीका भार हरण कीजिये । यदुनन्दन ! हम आपके चरणोंमें वन्दना करते हैं।

दिष्ट्याम्ब ते कुक्षिगतः(फ्) परः(फ्) पुमा-

नं(म्)शेन साक्षाद् भगवान् भवाय नः ।

मा भूद् भयं(म्) भोजपतेर्मुमूर्षोर्-

गोप्ता यदूनां(म्) भविता तवात्मजः ॥ 16॥

साक्षाद्+ भगवान्, माभूद्+ भयं(म्)भो+ जपतेर्+ मुमूर्षोर्

'माताजी ! यह बड़े सौभाग्यकी बात है कि आपकी कोखमें हम सबका कल्याण करनेके लिये स्वयं भगवान् पुरुषोत्तम अपने ज्ञान, बल आदि अंशोंके साथ पधारे हैं। अब आप कंससे तनिक भी मत डरिये । अब तो वह कुछ ही दिनोंका मेहमान है। आपका पुत्र यदुवंशकी रक्षा करेगा' ।

॥ इति ॥

भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु यह पीडीएफ विशेष रूप से परीक्षार्थियों के लिए ही संकलित की गई है, अतः मूल पुस्तक में दिए गए श्लोकांक इस पीडीएफ के श्लोकांकों से भिन्न हो सकते हैं।